The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 2 | February 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों और चरित्र निर्माण का समावेशन

दीपिका तिवारी

डॉ0 पुष्पेन्द्र कुमार वर्मा

शिक्षा विद्याशाखा, उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18919598

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 23-02-2026

Published: 10-03-2026

Keywords:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, महात्मा गांधी, बुनियादी शिक्षा, नैतिक शिक्षा, कार्यप्रधान शिक्षा, आत्मनिर्भरता, मूल्याधारित शिक्षा।

ABSTRACT

यह शोध–पत्र राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) में महात्मा गांधी के शैक्षिक दर्शन के सिद्धांतों के समावेशन का विश्लेषण करता है। गांधीजी की नई तालीम या बुनियादी शिक्षा की अवधारणा, जो कार्य–आधारित, मूल्य–संचालित और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने वाली शिक्षा पर जोर देती है, आज भी प्रासंगिक है। इस अध्ययन का उद्देश्य NEP 2020 के उन प्रावधानों की पहचान और मूल्यांकन करना है जो गांधीवादी विचारों जैसे– मातृभाषा में शिक्षा, व्यावसायिक कौशल, नैतिक विकास और अनुभवात्मक अधिगम (Experiential learning) को दर्शाते हैं। यह शोध NEP 2020 के दस्तावेजों और गांधीजी के शैक्षिक लेखन के तुलनात्मक विश्लेषण पर आधारित है। प्रमुख निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि NEP 2020 ने गांधीजी के कई प्रमुख विचारों को सैद्धांतिक रूप से अपनाया है, विशेष रूप से कौशल विकास, स्थानीय कलाओं को महत्व देना और शिक्षा को समग्र बनाना। हालांकि, इन सिद्धांतों के व्यावहारिक कार्यान्वयन में शहरी–ग्रामीण असमानता और आधुनिक तकनीक के साथ गांधीवादी सरलता का संतुलन जैसी महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी मौजूद हैं। यह अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालता है कि यदि गांधीवादी दर्शन को सही भावना के साथ लागू किया जाए, तो NEP 2020 एक आत्मनिर्भर और मूल्य–आधारित समाज के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है।

प्रस्तावना

महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता आज के इस तकनीकी–केंद्रित और प्रतिस्पर्धात्मक युग में अप्रासंगिक होने के बजाय और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली जहाँ अक्सर 'रटने की प्रवृत्ति' डिग्री की होड़ और व्यावहारिक जीवन से अलगाव जैसी समस्याओं से ग्रस्त है। वहीं गांधीजी का शैक्षिक दर्शन एक सार्थक विकल्प प्रस्तुत करता है। गांधीजी के लिए शिक्षा केवल साक्षरता या सूचनाओं का संग्रह नहीं थी। यह व्यक्ति के मन (बौद्धिक क्षमता), शरीर (शारीरिक कौशल) और आत्मा (नैतिक चेतना) के सामंजस्यपूर्ण और सर्वांगीण विकास का एक समग्र माध्यम थी। उनकी 'नई तालीम' या 'बुनियादी शिक्षा' की क्रांतिकारी अवधारणा इसी समग्र दृष्टिकोण पर आधारित थी। इसका मूख्य उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि ऐसे नागरिक तैयार करना था जो आत्मनिर्भर हों, जिनका चरित्र मजबूत हो, और जो अपने समाज के प्रति जिम्मेदार हों। यह 'दर्शन शिक्षा को जीवन से जोड़ने का एक सशक्त माध्यम था, न कि उसे कक्षाओं की चारदीवारी तक सीमित रखने का।'

चित्र संख्या–01

स्रोत– https://medium.com/@dakshdahiya360/reimagining-indian-education-gandhian-philosophy-and-the-crisis-of-modern-schooling-b3d532899c9c

महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन भारतीय परंपरा, नैतिकता, श्रम एवं आत्मनिर्भरता के मूल्यों पर आधारित है। उन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का माध्यम न मानकर व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का उपकरण माना, जिसमें 'नयी तालीम' या 'बेसिक एजुकेशन' के माध्यम से कार्य, नैतिकता और आत्मनिर्भरता का समावेश प्रमुख था। दूसरी ओर, भारत सरकार द्वारा घोषित राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी इसी दिशा में आगे बढ़ती दिखाई देती है, जहाँ शिक्षा को रोजगारोन्मुख, कौशल–आधारित, मूल्यनिष्ठ और आत्मनिर्भर भारत की दृष्टि से पुनर्परिभाषित किया गया है।

यह शोध पत्र गांधीवादी शिक्षा दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बीच वैचारिक सामंजस्य का विश्लेषण करता है। अध्ययन का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि कैसे गांधीजी के शिक्षा–सिद्धांत जैसे श्रम का सम्मान, मूल्यनिष्ठता, ग्रामोन्मुखता, स्वदेशीता, और सर्वांगीण विकास आज की नई शिक्षा नीति में पुनः प्रासंगिक रूप में प्रतिध्वनित होते हैं।

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विकास की आधारशिला होती है। यह न केवल ज्ञानार्जन का साधन है, बल्कि **'मनुष्य के सर्वांगीण विकास, चरित्र निर्माण और समाज के पुनर्निर्माण का भी सशक्त माध्यम है।'** भारत जैसे बहुस्तरीय और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश में शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्ति तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसका संबंध जीवन–मूल्यों, मानवता और आत्मनिर्भरता से गहराई से जुड़ा रहा है। इस सन्दर्भ में महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन भारतीय शिक्षा परंपरा का सबसे प्रासंगिक और जीवनपरक स्वरूप प्रस्तुत करता है।

गांधीजी ने शिक्षा को 'जीवन का उपकरण' कहा, जो मनुष्य को केवल पढ़ा–लिखा नहीं बनाती, बल्कि उसे सच्चा, नैतिक और आत्मनिर्भर नागरिक बनाती है। उनके अनुसार

''शिक्षा वह प्रक्रिया है जो बालक के शरीर, मन और आत्मा में सर्वोत्तम गुणों का विकास करती है।''

गांधीजी ने अपने जीवन में शिक्षा को सत्य, अहिंसा, श्रम, सेवा, स्वावलंबन और नैतिकता के साथ जोड़ा। उन्होंने 1937 में 'नई तालीम' या 'बेसिक एजुकेशन' की परिकल्पना प्रस्तुत की, जिसका उद्देश्य था ''श्रम के माध्यम से शिक्षा'' (Education through Craft)। गांधीजी का मानना था कि शिक्षा का सीधा संबंध जीवन और समाज की आवश्यकताओं से होना चाहिए। उन्होंने ग्रामोन्मुख, श्रमप्रधान और मूल्यनिष्ठ शिक्षा का जो मॉडल प्रस्तुत किया, वह आज भी भारतीय शिक्षा की आत्मा के रूप में देखा जाता है।

दूसरी ओर, स्वतंत्र भारत की नवीनतम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (National Education Policy 2020) ने भी शिक्षा को जीवनोपयोगी, समग्र, कौशल–आधारित और मूल्यपरक दिशा में पुनर्गठित करने का प्रयास किया है। यह नीति भारतीय ज्ञान परंपरा, बहुभाषिकता, नवाचार और आत्मनिर्भरता को केन्द्र में रखती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रतिपादित ''आत्मनिर्भर भारत'' का विचार भी इस नीति का एक प्रमुख प्रेरक तत्व है, जो भारत को न केवल आर्थिक रूप से बल्कि बौद्धिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी सशक्त बनाने की दिशा में अग्रसर करता है।

साहित्य समीक्षा (Literature Review)

शिक्षा दर्शन के क्षेत्र में महात्मा गांधी का योगदान केवल भारत तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उनका प्रभाव विश्व स्तर पर देखा गया है। गांधीजी ने शिक्षा को व्यक्ति के आत्म–विकास, समाज सुधार और राष्ट्र निर्माण का साधन माना। उनके शिक्षा संबंधी विचारों पर बीसवीं सदी से अब तक अनेक शिक्षाविदों, समाजशास्त्रियों और नीति–निर्माताओं ने

अध्ययन एवं विश्लेषण प्रस्तुत किए हैं। इसी प्रकार, स्वतंत्र भारत में लागू 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020)' पर भी व्यापक विमर्श हुआ है, जो आधुनिक संदर्भ में गांधीवादी आदर्शों की पुनर्प्रतिष्ठा का संकेत देती है।

1. एम. के. गांधी (1937) द्वारा लिखित ''नई तालीम'' में उन्होंने शिक्षा को कार्य और जीवन के साथ जोड़ने की आवश्यकता बताई। उन्होंने यह भी कहा कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाना है, जिससे वह अपने श्रम से जीवनयापन कर सके।
2. जाकिर हुसैन (1940) ने अपनी पुस्तक 'Basic National Education' में गांधीवादी शिक्षा को भारतीय समाज के पुनर्निर्माण का आधार बताया। उनके अनुसार, गांधीजी की शिक्षा नीति बच्चों में ''श्रम के प्रति सम्मान'' और ''नैतिक जिम्मेदारी'' का भाव उत्पन्न करती है।
3. डॉ. राधाकृष्णन (1948) ने 'University Education Commission Report' में गांधीवादी शिक्षा को ''सर्वांगीण मानवीय विकास की दिशा'' कहा, जिसमें ज्ञान, कर्म और भक्ति का संतुलन स्थापित होता है।
4. कस्तूरीरंगन समिति रिपोर्ट (2019), जो इस नीति का प्रारूप आधार रही, ने ''समग्र एवं बहुविषयक शिक्षा'' को भारतीय संस्कृति के अनुरूप बताया। रिपोर्ट में यह भी कहा गया कि भारतीय शिक्षा प्रणाली को स्थानीयता और स्वदेशीता की भावना से जोड़ना आवश्यक है।
5. भारत सरकार (2020) द्वारा जारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति दस्तावेज में यह कहा गया है कि शिक्षा को ऐसी दिशा में ले जाना होगा जिससे 21वीं सदी का भारत वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बन सके।

गांधीवादी शिक्षा परिप्रेक्ष्य

शिक्षा का गांधीवादी दृष्टिकोण समग्र विकास में उनके विश्वास को दर्शाता है, जो श्रम की गरिमा को सीखने की प्रक्रिया और मानसिक और शारीरिक श्रम के बीच के अंतर को कम करने के रूप में सुनिश्चित करता है। उनकी दृष्टि में चरित्र निर्माण, नैतिकता, आचार और मूल्य शामित है। उन्होंने बौद्धिक अभ्यास और शारीरिक श्रम के संयोजन के महत्व, या व्यावसायिक शिक्षा के महत्व को महसूस किया, जिसे उन्होंने व्यक्ति की नैतिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रगति प्राप्त करने के तरीकों में से एक माना। इसलिए, गांधी के शैक्षिक दर्शन का उद्देश्य समाज में परिवर्तनकारी बदलाव लाने के लिए व्यक्तियों के बीच सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन प्राप्त करना है। उन्होंने शिक्षा को मुक्ति की एक प्रक्रिया के रूप में माना जो शिक्षार्थी को स्वयं का एहसास कराने में सक्षम बनाती है।

गांधी के अनुसार,

''शिक्षा का उद्देश्य एक अहिंसक, गैर–शोषणकारी सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था की शुरुआत करना है।''

गांधीजी शिक्षा को एक नैतिक मूल्य प्रणाली मानते थे जो व्यक्ति और समाज के विकास के लिए आवश्यक है। इसलिए, गांधीजी के अनुसार, **''शिक्षा का उद्देश्य शिक्षार्थियों को समाज के समर्पित सेवक बनने के योग्य बनाना है**

जो समाज के लिए जिएँ और मरें।'' इसलिए, उन्होंने चरित्र निर्माण पर अधिक बल दिया। और कहाँ कि चरित्र विरासत में नहीं मितता, बल्कि सीखा जाता है, जो व्यक्ति की अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण रखने की क्षमता को दर्शाता है। इसलिए, ज्ञान के अंतिम उत्पाद का लक्ष्य नैतिक चरित्र होना चाहिए। केवल अच्छे चरित्र वाला व्यक्ति ही हिंसा और अन्याय से मुक्त सामाजिक व्यवस्था का निर्माण कर सकता है।

गांधी और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

शिक्षा पर गांधी का दृष्टिकोण राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कई घटकों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। वास्तव में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मूल्य और शिक्षा के प्रति बहु–विषयक दृष्टिकोण पर जोर गांधी के विचारों से अत्यधिक प्रभावित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय लोकाचार में निहित एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की परिकल्पना करती है जो भारत को स्थायी रूप से एक समतामूलक और जीवंत ज्ञान समाज में बदलने में प्रत्यक्ष योगदान दे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में एक ऐसे पाठ्यक्रम के विकास की भी परिकल्पना की गई है जो न केवल स्थानीय संस्कृति, स्थानीय कौशल और स्वदेशी ज्ञान प्रणाली पर आधारित हो, बल्कि व्यक्ति को भारत के संवैधानिक मूल्यों के प्रति गहरा सम्मान और समाज एवं राष्ट्र के प्रति व्यक्ति की भूमिका विकसित करने में भी सहायता करे, जिसे गांधी लोकतांत्रिक मूल्य मानते थे। गांधी का मानना था कि शिक्षा व्यक्ति को लोकतंत्र के सामाजिक पहलुओं पर आधारित एक सामूहिक जीवन जीने में सक्षम बनाए। उन्हें अपने सामाजिक परिवेश के साथ सर्वोत्तम तरीके से खुद को समायोजित करना सीखना चाहिए।

गांधीजी का मानना था कि प्रारंभिक शिक्षा में स्वच्छता, स्वास्थ्य, पोषण, अपने कार्यों को स्वयं करना और घर पर माता–पिता की सहायता करना शामिल होना चाहिए। यह भारत की प्राचीन गुरुकुल प्रणाली की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी, जहाँ प्रत्येक छात्र को बचपन से ही आत्मनिर्भर बनने के लिए सभी गतिविधियाँ सिखाई जाती थीं। यह शिक्षा प्रणाली न केवल आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करती है, बल्कि छात्रों को व्यावहारिक प्रशिक्षण भी प्रदान करती है। इसलिए, सीखना केवल किताबें पढ़ने तक सीमित नहीं है। बल्कि, प्राचीन शिक्षा प्रणाली के अनुभवों से सीखने पर केंद्रित है क्योंकि प्राचीन भारत में शिक्षा का अंतिम उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं था।

भारत की स्वदेशी शिक्षा प्रणाली आध्यात्मिकता पर आधारित थी, जहाँ शिक्षक शिक्षा प्रणाली का केंद्र था। शिक्षकों को पाठ्यक्रम और शिक्षण–अधिगम सामग्री तैयार करने की पूर्ण स्वायत्तता थी। प्राचीन शिक्षा प्रणाली में शासकों का हस्तक्षेप नहीं था। हमें ऐसे संदर्भ मिलते हैं जिनसे पता चलता है कि गुरुकुल में राजाओं के पुत्रों को भी अन्य लोगों के समान ही सम्मान मिलता था। इसलिए, प्राचीन काल में शिक्षक, जो एक प्रमुख स्थान रखते थे, माता–पिता, शिक्षा के संवाहक, दार्शनिक, सुधारक, नैतिक शिक्षक और मूल्यांकनकर्ता जैसी भूमिकाएँ निभाते थे।

इसी तरह, गांधी भी भारतीय शिक्षक को बाहरी हस्तक्षेप, विशेष रूप से सरकारी या राज्य नौकरशाही से मुक्त करना चाहते थे। एनईपी 2020 भी शिक्षक के महत्व पर केंद्रित है। एनईपी 2020 के महत्वपूर्ण सिद्धांतों में से एक है सीखने

की प्रक्रिया के केन्द्र में संकाय का स्थान निर्धारित करना। यह ध्यान देने योग्य है कि गांधी ने शिक्षक को भी महत्व दिया था। उन्होंने बताया कि शिक्षक वे नहीं होने चाहिए जो कोई अन्य नौकरी खोजने में असमर्थ हैं। एनईपी 2020 आगे शिक्षण संस्थानों को स्वयं निर्णय लेने के लिए अधिक स्वायत्तता प्रदान करने पर केंद्रित है, जो प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली की एक विशेषता है।

गांधीजी की बुनियादी शिक्षा पर 1937 के वर्धा सम्मेलन का NEP 2020 पर काफी प्रभाव पड़ा है। वर्धा सम्मेलन में गांधी ने प्रचलित शिक्षा प्रणाली पर सवाल उठाए थे, जहाँ अंग्रेजी शिक्षण का माध्यम है और शिक्षा में व्यावसायिक प्रशिक्षण का अभाव है, जो मातृभाषा को शिक्षण माध्यम के रूप में लागू करने जैसी सिफारिशों का आधार है, नैतिक और आचार मूल्यों पर आधारित शैक्षिक पाठ्यक्रम पर ध्यान केंद्रित करना जिससे व्यक्ति आदर्श नागरिकता और राष्ट्र के प्रति अपने अधिकारों और कर्तव्यों को समझ सके। इसके अलावा, इस सम्मेलन में समाज के प्रति जवाबदेही विकसित करने पर भी ध्यान केंद्रित किया गया। इसी प्रकार, NEP 2020 भी शिक्षा प्रणाली में समुदाय को शामिल करने और मातृभाषा को शिक्षण माध्यम के रूप में बढ़ावा देने पर केंद्रित है। मातृभाषा को शिक्षण माध्यम के रूप में शामिल करने से भारतीय संस्कृति और भाषा को बढ़ावा और संरक्षण मिलेगा और छोटे बच्चों को गैर–तुच्छ अवधारणाओं को अधिक तेजी से सीखने और समझने में मदद मिलेगी। इसके अलावा, यह उम्मीद की जाती है कि एक भारतीय भाषा का अनिवार्य शिक्षण हमारी भाषाई और सांस्कृतिक विविधता की रक्षा और संवर्धन करेगा।

गांधीजी के अनुसार, भारत मुख्यतः गाँवों से बना है, जो विकास प्रयासों के मामले में सबसे वंचित क्षेत्र हैं। गांधीजी ग्रामीण गरीबों की शिक्षा को लेकर बहुत चिंतित थे और उनका मानना था कि मौजूदा शिक्षा प्रणाली ग्रामीण–अनुकूल नहीं है। इसलिए, उन्होंने ग्रामीण शिक्षा पर जोर दिया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च–गुणवत्ता वाली शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालती है। यह दस्तावेज वंचित क्षेत्रों में उच्च–गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करने के लिए सामाजिक–आर्थिक रूप से वंचित समूहों और विशेष शिक्षा क्षेत्रों जैसी अवधारणाओं का परिचय देता है।

इसके अलावा, एनईपी 2020 भारत को ज्ञान निर्माण में एक महाशक्ति बनाने के लिए शिक्षा के भारतीयकरण पर भी केंद्रित है। नीति का उद्देश्य सहयोग और संकाय छात्र विनिमय कार्यक्रमों के माध्यम से भारत को वैश्विक अध्ययन गंतव्य के रूप में बढ़ावा देना है। इसके अलावा, इस नीति का उद्देश्य विश्व स्तर पर सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों को भारतीय धरती पर केन्द्र स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करना भी है ताकि जो लोग विदेश में अध्ययन करना चाहते हैं वे समान ज्ञान प्राप्त कर सकें लेकिन भारतीय मूल्य प्रणाली के साथ। इसी तरह, गांधी का मानना था कि जो लोग विदेश में शिक्षित होते हैं वे आमतौर पर भारतीय शिक्षा की जड़ों से संपर्क खो देते हैं, और उन्होंने कभी भी शिक्षा प्राप्त करने के लिए विदेश जाने की वकालत नहीं की। उन्होंने कहा, मैं कभी भी हमारे छात्रों के विदेश जाने का समर्थक नहीं रहा। मेरा अनुभव मुझे बताता है कि लौटने पर, वे खुद को गोल छेद में चौकोर खूंटे की तरह पाते हैं।

एनईपी 2020 ने देश के विकास में योगदान देने वाले सदस्य बनने में शिक्षार्थियों की सहायता के लिए सूचना, ज्ञान, कौशल और मूल्य प्रदान करके शैक्षणिक पाठ्यक्रम और शिक्षण पद्धति में सुधार के ईमानदार प्रयास किए हैं। हालाँकि, नीति दस्तावेज को लेकर कई आशंकाएँ हैं। सबसे बड़ा सवाल इसके कार्यान्वयन और अंग्रेजी भाषा की भूमिका को लेकर है। मातृभाषा शिक्षा पर महत्वपूर्ण जोर देने के बावजूद, अंग्रेजी शिक्षा की लोकप्रियता बनी हुई है। भारतीय परिसरों में विदेशी विश्वविद्यालयों की उपस्थिति व्यवस्था की गुणवत्ता पर और सवाल उठाती है। इन चिंताओं के बावजूद, एनईपी 2020 को भारतीय शिक्षा के इतिहास में एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण माना जा सकता है। यह न केवल समाज की वर्तमान आवश्यकताओं को संबोधित करता है, बल्कि भारतीय मूल्य प्रणाली के इर्द–गिर्द घूमता है, जिसका उद्देश्य मानवीय और संवैधानिक मूल्यों के प्रति सम्मान रखने वाले आत्मनिर्भर समुदायों से युक्त एक आदर्श समाज का विकास करना है।

गांधी का मानना था कि शिक्षा सीखने के बिना अधूरी है, और सीखना एक सतत प्रक्रिया है। गांधी के अनुसार, शिक्षा प्रणाली ने मन को प्राथमिकता दी और शरीर व आत्मा को कहीं पीछे छोड़ दिया । वास्तव में, एनईपी 2020 का फोकस इसी दृष्टिकोण से मेल खाता है। इस नीति का केंद्रीय विषय रचनात्मकता और अनुसंधान के संदर्भ में व्यक्तिगत गुणवत्ता को बढ़ाना है ताकि व्यक्ति नैतिकता और मूल्यों को बनाए रखने के साथ–साथ तर्कसंगतता, करुणा, सहानुभूति, लचीलापन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और रचनात्मकता जैसे गुणों के साथ एक बहुलवादी, फिर भी समतामूलक और समावेशी समाज के विकास में योगदान दे सकें। इसलिए, एनईपी 2020, जो एक मूल्य–आधारित शिक्षा प्रणाली पर जोर देती है, से भारत को एक शांतिपूर्ण, सुरक्षित, समृद्ध और विकसित राष्ट्र में बदलने की उम्मीद है।

निष्कर्ष (Conclusion)

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के निर्माण, विकास और उसके सांस्कृतिक पुनर्जागरण की मूल धुरी है। भारत जैसे बहुआयामी और परंपरा संपन्न देश में शिक्षा केवल ज्ञानार्जन की प्रक्रिया नहीं, बल्कि एक जीवन–दर्शन है, जो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र–तीनों के चरित्र को गढ़ती है। महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन इसी व्यापक दृष्टि का प्रतीक है। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि व्यक्ति में आत्मनिर्भरता, नैतिकता, श्रम की प्रतिष्ठा और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना होना चाहिए। दूसरी ओर, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) ने इसी विचार को आधुनिक संदर्भ में पुनर्परिभाषित किया है, जहाँ शिक्षा को जीवन–कौशल, मूल्य, नवाचार और आत्मनिर्भरता से जोड़ा गया है।

गांधीवादी शिक्षा दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, दोनों में समान रूप से यह विश्वास परिलक्षित होता है कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति और समाज के सर्वांगीण विकास में निहित है। गांधीजी ने नई तालीम के माध्यम से जिस कार्य–आधारित और नैतिक शिक्षा की परिकल्पना की थी, आज वह ''अनुभवात्मक शिक्षण (Experiential Learning)'' और ''कौशल–आधारित शिक्षा (Skill & based Education)'' के रूप में राष्ट्रीय शिक्षा नीति का

अभिन्न अंग बन चुकी है। यह एक प्रमाण है कि गांधीवादी शिक्षा दृष्टि आज भी भारतीय शिक्षा के केंद्र में विद्यमान है– बस उसका रूप और संदर्भ समय के अनुरूप परिवर्तित हुआ है।

अंततः कहा जा सकता है।

‘‘राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 गांधीवादी शिक्षा दर्शन की आत्मा का आधुनिक रूप है,

जो आत्मनिर्भर भारत के निर्माण हेतु एक समन्वित वैचारिक सेतु का कार्य करती है।’’

यदि शिक्षा प्रणाली गांधीजी के विचारों की आत्मा को अपनाते हुए NEP 2020 के ढाँचे में क्रियान्वित हो, तो भारत निश्चित ही उस दिशा में अग्रसर होगा जहाँ शिक्षा केवल नौकरी का साधन नहीं, बल्कि राष्ट्रनिर्माण का माध्यम बनेगी और यही गांधीवादी शिक्षा का परम लक्ष्य है।

संदर्भ सूची (References)

- पांडेय, रामशकल (2018). समकालीन भारतीय समाज में शिक्षक. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
- शर्मा, एस. एन. (2005). भारतीय शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय आधार. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- पाठक, डॉ. ओमप्रकाश (2019). गांधीवादी शिक्षा दर्शन रू एक अध्ययन. एटलांटिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
- सिंह, अशोक कुमार (2020). भारत में शिक्षा के दर्शन और नीति. किताब महल, इलाहाबाद।
- मिश्रा, एम. एल. (2021). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 रू दर्शन, उद्देश्य और कार्यान्वयन. नई बुक्स इंडिया, दिल्ली।
- Ministry of Education, Government of India. (2020). National Education Policy 2020 New Delhi
- https://www.education.gov.in/nep2020/ (https://www.education.gov.in/nep2020/)
- University Grants Commission (UGC). (2021). Implementation Guidelines for National Education Policy 2020 in Higher Education New Delhi.
- NITI Aayog. (2020). Atma Nirbhar Bharat Abhiyan: Towards a Self-Reliant India Niti Aayog, Bharat Sarkar.